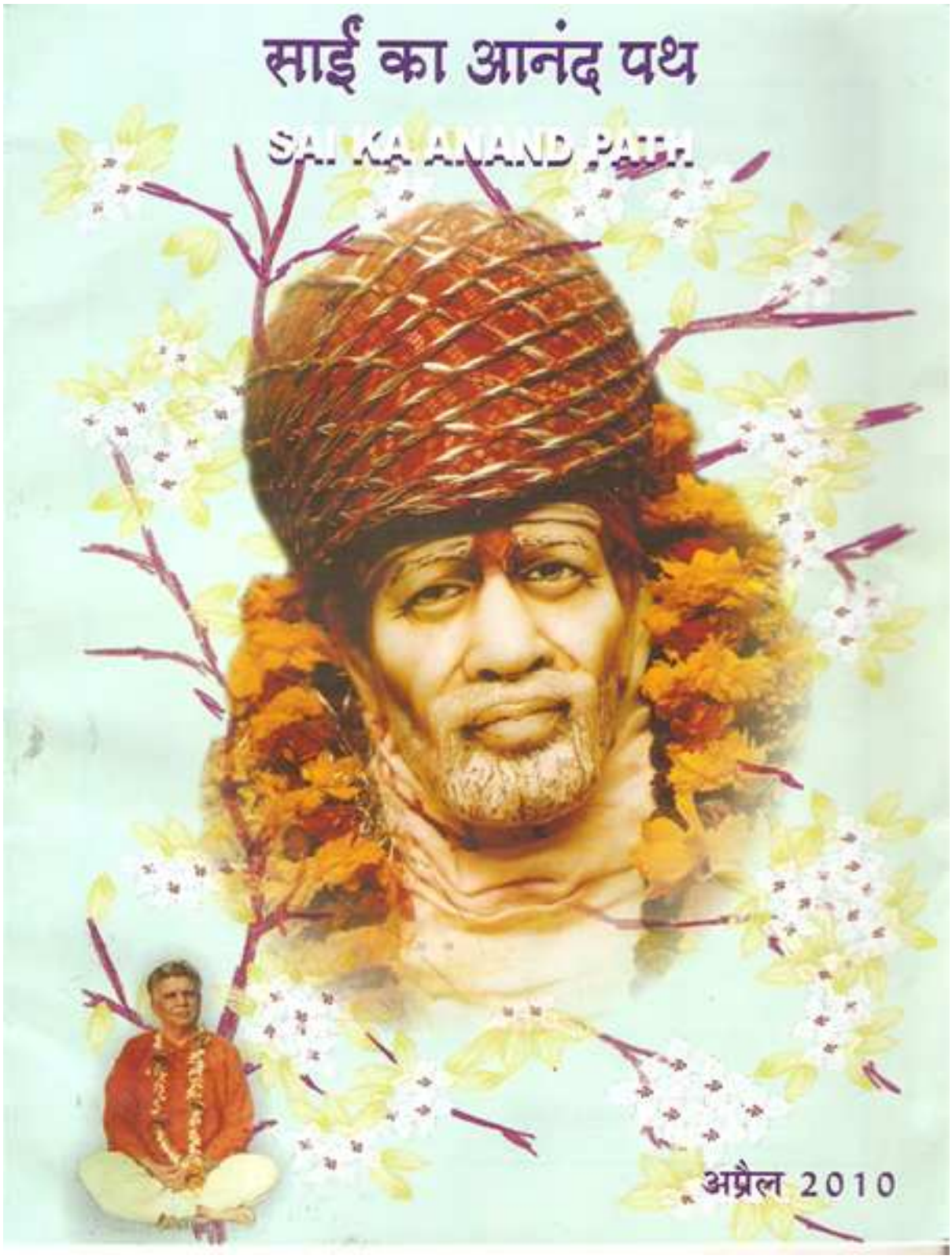
साईं का आनंद पथ
SAI KA ANAND PATH
अप्रैल 2010

साईं का आनंद पथ
SAI KA ANAND PATH

QUARTERLY MAGAZINE

April – 2010

Correspondence Address

SAI KA ANAND PATH

Sri Anand Sai Marg
Besides Ananda Apts.
Clarke Town,
NAGPUR-440 004.(M.S.)
Ph.No. 6574825
Cell : 9823134765
e-mail :
saipublications@rediffmail.com

Published & Edited by :
Ranveer Taneja

SUBSCRIPTION :
Life (25 Years) : Rs. 1400/-
5 Years : Rs. 350/-
2 Years : Rs. 200/-

Printed at :
Mudrashilpa Offset Printers,
Nagpur

Type setting :
Lipi Systems
Dhantoli, Nagpur.
M.: 9921614855

Please quote your Registration No. while corresponding.

CONTENTS / अंतरंग

हिन्दी विभाग

अमृत सन्देश (Divine Nectar)	...	1
पाप हरण स्तोत्र	...	2
समर्पण	...	3-8
आनंद का पथ	...	9-12
सच्चा भक्त कौन?	...	13-16
मैं जंत्र तू जंत्री	...	17-19
उठो जागो	...	20
साईं भोलेनाथ	...	21-22
गृहस्थियों के लिए पँच कल्याकारी महान तीर्थ		23-24
दु:खों से छूटने के तीन अचूक उपाय	...	24
माई गोद में वास	...	25-26
कान्हा तुझे प्रणाम!	...	26
सुन मेरी आवाज़	...	27-29
कलाम-ए-साईं	...	30
सिमरन कर ले प्राणी	...	31-32
दूसरों के लिए जीओ	...	33
प्यार की तरंगे	...	34-35
श्री राम जी की स्तुति	...	36

English Section

Divine Path	...	37-38
Our Heart – Our Soul	...	39-43
Nectar Message	...	44
Your Own Page	...	45-48

May Sai's Blessings Enlighten you.

The editor does not accept responsibility for views expressed in articles published.

अमृत-सन्देश

NECTAR MESSAGE

(The Message of Sri Anand Sai penned in His own hand)

Life is a series of problems. Some of them are apparently insolvable. Do not try to solve problems. Instead meditate on the Divine Sai Mother. All problems shall be solved by themselves.

Self

XV-XI-78

Life is a series of problems. Some of them are apparently insolvable. Do not try to solve problems. Instead meditate on the Divine Sai Mother. All problems shall be solved by themselves.

Self
15-11-1978

पाप हरण स्तोत्र

दुर्गा गौरी उमा भवानी ।
जै अम्बे जै राधे रानी ।।
जै काली जै चण्डी माता ।
हरो पाप माई सुखदाता ।।
आसा देवी नैना देवी ।
जै गंगा जै वैष्णू देवी ।।
मीनाक्षी कामाक्षी माता ।
हरो पाप माई जगत्राता ।।
जै लक्ष्मी जै सरस्वती मैय्या ।
जै ललिता जै जगत रचैय्या ।।
साईं रूप धर आई माता ।
हरो पाप जन भक्ति दाता ।।

"ॐ श्री साईं"

समर्पण

प्राणप्यारे सत्गुरु श्री आनंद साईं जी की असीम कृपा से आज एक बार फिर आपसे मुखातिब हैं। सत्गुरु के संग बिताए गए लम्हों की याद ताज़ा हो आती है जब भी इस शीर्ष अंतर्गत कुछ कलमबद्ध करने के लिए कलम उठती है। पता नहीं रहता कि इस बार प्राणप्यारे क्या लिखवाएँगे। सच मानिए· शून्य होकर यह जीव कलम हाथ में ले लेता है और उसके बाद क्या लिखाया जाता है यह समापन के बाद पढ़कर ही समझ आता है कि प्राणप्यारे ने इस नाचीज़ के जरिए क्या कलमबद्ध किया है। यह एक बार नहीं हर बार ऐसा ही होता है। इस शीर्ष के अंतर्गत जो भी आप पढ़ते हैं वो उस परमगुरु परमात्मा मेरे परमप्यारे मुर्शद, परम उदार परम उद्धारक श्री आनंद साईं जी का कृपा प्रसाद ही है। उसमें मेरा अपना एक भी शब्द नहीं होता। जिसकी देन है वो ही जाने। जब अपना उसमें कुछ भी नहीं तो उसे अपनाना बनता ही नहीं। सत्गुरु का प्रसाद सत्गुरु की आशिष से आप तक इस माध्यम से पहुँचता है। इसमें इस तुच्छ जीव का कुछ भी नहीं यह पूर्णत: सच्चाई है। तिल मात्र भी इस जीव का इसमें कोई किसी प्रकार का भी भाग नहीं ये ही सत् है। तो आईए आपके साथ मिलकर देखें सत्गुरु इस बार कौन सा प्रसाद देते हैं।

प्राणप्यारे गुरुदेव एक किस्सा सुनाया करते थे। इस बार उसी किस्से से शुरुवात करते हैं। एक पंडित जी वेद विद्या सीखने के लिए गुरुकुल गए। वहाँ गुरु से ज्ञान अर्जित कर वे अपने गाँव की ओर जा रहे थे। मन में बड़ा गुरूर था कि उन्होंने विद्या ग्रहण कर ली है, अब ज्ञानी हो गए हैं। जिस गाँव से गुजरते वहाँ ज्ञान की बातें करते। बिचारे गाँव के सीधे सादे लोग उनकी वाहवाही करते, पंडित जी और फूल जाते। उनके ज्ञान का अभिमान और बढ़ जाता।

पंडितजी ऐसे ही एक गाँव में अपना ज्ञान बता रहे थे कि एक साधारण सा इंसान जो उनकी बातें सुन रहा था पंडितजी से बोला पंडितजी आप तो महाज्ञानी हैं। मेरी एक शंका का समाधान करेंगे क्या? पंडितजी ने हाँ कहा – तो उस साधारण से इन्सान ने पंडितजी से कहा कि मेरे मन में कई वर्षों से एक सवाल घूम रहा है जिसका समाधान आज तक नहीं हो पाया। मुझे बताईए **पाप का बाप कौन है**? पंडितजी विपदा में पड़ गए। सोचने लगे कि यह बात तो गुरु ने नहीं सिखाई। पाप तो बताए परन्तु उसका बाप कौन है यह तो बताया ही नहीं। पंडितजी जवाब न दे पाए और काफी सोच-विचार करने के बाद उस सज्जन से बोले कि भाई हमें गुरुजी ने सब कुछ सिखाया। पाप की परिभाषा भी बड़े विस्तार से समझाई उसके प्रकार भी बताए लेकिन पाप का बाप कौन है इस बात पर प्रकाश नहीं डाला अपितु हम आपके प्रश्न का जवाब देने में असमर्थ हैं। सीधे सादे इन्सान के रूप में प्रगटे भोलेनाथ उस पंडित से बोले – हे ब्राह्मण आपका पुस्तकी ज्ञान है। वास्तव में आप सच्चाई से काफी दूर हैं। इस ज्ञान को अर्जित कर आप अहंकार उठाकर अपना सर्वनाश कर रहे हो। संभल जाओ ब्राह्मण। तुम्हें मेरे इस सवाल का उत्तर चाहिए हो तो आप इसी गाँव में आगे वाली गली के अंत में जो घर है वहाँ चले जाओ। वहाँ आपको इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। इतना कहकर वह साधारण सा इंसान भीड़ में विलीन हो गया। पंडित को तो जानना ही था कि पाप का बाप कौन है। वो उस घर के द्वार पर जा पहुँचे और दस्तक दी। एक सुंदर, सुशील महिला ने दरवाजा खोला और पंडितजी से आने का कारण पूछा तो पंडितजी ने सारी बात बताई। महिला उन्हें अंदर ले गई और बताया कि मैं तो एक वैश्या हूँ मैं आपको क्या बता सकती हूँ कि पाप का बाप कौन है? पंडितजी बोले लेकिन मुझे तो आपसे ही इस प्रश्न का उत्तर मिलेगा ऐसा उस सज्जन ने बताया है जिन्होंने यह प्रश्न मुझसे किया था। वैश्या बोली, पंडितजी ठीक है, आप बैठिए तो सही। पंडितजी बोले हम एक वैश्या के घर में नहीं बैठ सकते। आप तो

हमारा समाधान कीजिए और हमें जाने दीजिए। वैश्या ने फिर उन्हें बैठने को कहा परन्तु पंडितजी तैयार नहीं हुए। वैश्या पंडितजी से बोली आप इतना लम्बा सफर करके आ रहे हैं आप थक गए होंगे आप बैठिए मैं आपके लिए भोजन लेकर आती हूँ इससे पहले कि पंडितजी कुछ कहते वो महिला अंदर चली गई। पंडितजी चक्कर में पड़ गए कि मेरे प्रश्न का उत्तर देने कि बजाए यह महिला तो औपचारिकता में लग गई है। हम तो वैश्या के घर का पानी तक नहीं पी सकते, कुछ खा भी नहीं सकते। क्योंकि वो तो एक पापिन है। थोड़ी ही देर में वह महिला थाली में खाना परोसकर ले आई। पंडितजी सोने की थाली, कटोरी और ग्लास में परोसा हुआ खाना देखकर चौंक से गए। महिला ने उन्हें भोजन करने को कहा परन्तु वो तैयार नहीं हुए। काफी आग्रह करने के बाद भी पंडितजी नहीं माने तो महिला बोली पंडितजी आप मेरे घर का भोजन पा लें मैंने आपको जिन सोने के बर्तनों में भोजन परोसकर दिया है वह सारे बर्तन आपको भेंट स्वरूप दे दूँगी। यह सुनकर पंडितजी के मन में आया यदि मैं सारी ज़िंदगी भी लगा रहूँ तो भी मेरे ज्ञान की बदौलत मैं इतना कमा नहीं पाऊँगा जितना मुझे यहाँ भोजन मात्र करने से मिल जाएगा। यहाँ तो मुझे कोई देख भी नहीं रहा। मैं भोजन करके निकल भी गया तो किसी को भी पता नहीं चलेगा और मुझे यह सोने के बर्तन मिल जाएँगे। यह सोचकर पंडितजी बैठ गए और भोजन करने को तैयार भी हो गए। महिला ने उनके सामने थाली रख दी। जैसे ही पंडितजी ने पहला कौर तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया उस महिला ने सोने के बर्तनों को उठा लिया और बोली पंडितजी यही आपके प्रश्न का उत्तर है। पाप का बाप यह ही है। आप मुझ वैश्या के घर में बैठने को भी तैयार नहीं थे लेकिन जैसे ही मैंने आपको सोने के बर्तन देने की बात कहीं तो आप बैठ भी गए और भोजन करने को तैयार भी हो गए। तो पंडितजी ये **लोभ ही पाप का बाप है**। पंडितजी की आँखें खुल गईं। सोचने लगे कितने सुंदर तरीके से इस वैश्या ने सबक सिखाया। पंडित जी का अहंकार नष्ट हो गया।

यह किस्सा कितना ज्ञानप्रद है। जब जीव में लोभ लालच जागृत होता है, जब जीव में लालसा उत्पन्न होती है तो पाप का जन्म होता है। यह पाप जीव में जब रच जाता है उसकी आत्मा को सुला देता है। उसकी विचार शक्ति को नाश कर देता है। पंडितजी के लिए उस वैश्या का घर नापाक था। उस वैश्या के घर का पानी भी पीने को तैयार नहीं थे, वहाँ बैठना भी उन्हें नागवार था लेकिन सोने के लालच में आकर वे सब कुछ भूल गए। वहाँ, उस वैश्या के घर में बैठ भी गए, भोजन भी करने को तैयार हो गए। उस वैश्या को पापी कहने वाला पंडित उस पापिन के सब पाप भुलाकर, मात्र सोना पाने के लालच में फँसकर अपना सारा ज्ञान एक तरफ रख दिया, तो सत्गुरु देव ने एक छोटे से किस्से के द्वारा कितनी गहन बात समझाई। सत्गुरु की हर बात में गहन अर्थ छिपा होता है। आप सब भी समझ गए होंगे कि पाप का बाप कौन है। जी हाँ पाप का बाप है लालच। लालच के बीज से ही पाप का अंकुर फूटता है जो धीरे-धीरे एक विशाल पेड़ का रूप ले लेता है। जीव इसी चक्कर में पड़ा अपना जीवन झुलसती धूप में गुज़ार कर आगे चला जाता है। ऐसा क्यों है? क्योंकि इस पेड़ में शाखाएँ तो बहुत होती हैं लेकिन इन शाखाओं पर एक भी पत्ता नहीं होता। यह पेड़ किसी को भी छाया नहीं दे सकता। इस पेड़ के नीचे किसी को भी शीतल छाया का सुख नहीं मिलता। इसे और थोड़ा विस्तार से बताते हैं। इस पेड़ की छाया में शीतलता ढूँढ़ते हैं उस परिवार के सदस्य, उस पेड़ रूपी जीव को जानने वाले, उसके रिश्तेदार लेकिन उनमें से कोई भी इस पेड़ की सुखद छाया का आनंद ले ही नहीं सकता क्योंकि उस पेड़ से छाया तो आती ही नहीं उल्टा और अधिक जुलस भरी लौ निकलती है जो तपिश को और बढ़ाती है। दुनियाँ की गर्म हवाओं में झुलसते जीव इस पेड़ से और अधिक झुलस जाते हैं तो भाई पाप के बाप से बचिए और जीवन सुखमय बनाईए।

प्राणप्यारे सत्गुरु श्री आनंद साईं जी बड़े सुंदर ढंग से बताते थे कि बाबा

साईंनाथ के चरणों में जो आता है वो भेड़ बकरी की तरह मैं ... मैं ... मैं करता आता है। बाबा उनमें से कुछ चुनिंदा बकरियों को अपने बहुत ही सुंदर दालान में प्रेम, भक्ति, दया, श्रद्धा और विश्वास की हरी-हरी घास खिलाते हैं। खुद चरवाहा बन कर इन मैं–मैं–मैं करती बकरियों को धीरे-धीरे तू–तू–तू करते ऊँटों में परिवर्तित करते हैं। फिर इन ऊंटों को उस दालान से निकालकर एक बहुत ही सुंदर, रौशनी से जगमगाते मार्ग पर ले आते हैं। वहाँ दुनियाँ की सबसे तेज़ चलने वाली गाड़ी खड़ी रहती है। उसके ड्रायवर बाबा साईंनाथ खुद होते हैं। इन तू–तू–तू ही तू करते जीव रूपी ऊंटों को उस सुंदर सजी हुई गाड़ी में बिठाकर अध्यात्म रूपी लोह मार्ग पर तेजी से चलाते हैं और मंजिल तक खुद पहुँचाते हैं। जब जीव सत्गुरु की कृपा से मैं–मेरा छोड़कर, अपना अहं, अपना अहंकार छोड़कर तू–तेरा, मेरा कुछ भी नहीं सब कुछ तेरा तेरा तेरा कहना शुरु कर देता है। बाबा साईंनाथ के रहम-ओ-करम से वह अध्यात्म के मार्ग पर तेजी से बढ़ना शुरु करता है। साईं ऐसे जीवों का हाथ पकड़कर उन्हें मंजिल तक पहुँचा देते हैं। जीव उस साईं में मिलकर एक हो जाता है। उसका आवागमन का चक्कर खत्म हो जाता है। जन्म-मरण के भयानक चक्कर से जीव तब ही छूटता है जब वो अपनापन खोकर साईं के परम पावन चरणों में विलीन हो जाता है। थोड़े से शब्दों में सत्गुरु देव, प्राणप्यारे पापा ने अध्यात्म का सार समझा दिया। मैं – मेरा तजना दिखता बहुत आसान है लेकिन सरल नहीं है। इस अहंकार ने अनेकों को क्षण मात्र में जमीन दोस्त किया है। सत्मार्ग पर चलने वाली कई आत्माओं को पछाड़ने वाला यह अहं सत्गुरु की दया मात्र से ही वश में आ सकता है दूसरा कोई और रास्ता नहीं इसको काबू में करने का। सत्गुरु की करुणा जब जीव पर हो जाती है तो जीव अहंकार को तज सकता है।

लालच यानी पाप का बाप, अहंकार यानी मैं, मैं, मेरा, मेरा करता जीव रूपी बकरी आपस में जुड़े हुए हैं। दोनों का आपस में बड़ा ही गहरा संबंध

है। एक से दूसरा जागृत होता है तो दूसरे से पहला जागृत होता है। अध्यात्म में चलने वाले जिज्ञासुओं के मार्ग में बहुत गहरा गड्ढा है यह। इस गड्ढे में और भी कई गड्ढे हैं जो बाहर से दिखते नहीं लेकिन यदि जीव इस गड्ढे में गिर गया तो उसमें समाए बाकी गड्ढे भी उसे बाहर निकलने नहीं देते। जीव वहीं उठता गिरता रहता है। यदि जीव पर सत्गुरु की करुणा दृष्टि है तो वे उसे इस गड्ढे से बचाकर आगे ले जाते हैं फिर बाकी छोटे-छोटे गड्ढों से तो सत्गुरु का जीव के प्रति प्रेम सहज ही उसे बचाकर ले जाता है फिर वहीं आ कर बात रुक जाती है "श्री गुरु दया"। यह सौ में से सौ सत्य है कि अध्यात्म के मार्ग का मूल भूत श्री गुरु दया ही है। अध्यात्म शुरु होता है श्री गुरु दया से और अंत भी श्री गुरु दया पर ही होता है।

इस बार के लिए इतना ही। अगली बार इसी माध्यम से प्राणप्यारे सत्गुरु श्री आनंद साईं जी कृपा से फिर मिलेंगे। श्री साईं गीता की पंक्तियाँ याद आती है। सत्गुरु की महिमा क्या मनभावन शब्दों में कही गई है।

सत्गुरु के चरणार्विन्द वन्दऊँ आठो याम ।
भगत जनों के कल्पतरु सुखदायक सुखधाम ।।

गुरु के चरण-कमल पे सदा नवाऊँ शीश ।
गुरु विष्णु गुरु ब्रह्म हैं सत्गुरु सोयम् ईश ।।

सत्गुरु हैं दातात्रेय सोयम् वेदव्यास ।
गुरु की शरणी जो पड़े कबहुँ न होये निराश ।।

"जै जै दाता आनंद साईं"

श्री गुरु चरण-कमलों में सादर समर्पित

''ॐ साईं आनंदाय नमः''

आनंद का पथ

(श्री आनंद साईं जी के अमृत वचन)

"आनंद का पथ" इस शीर्षक के अंतर्गत या फिर अन्य शीर्षकों के अंतर्गत प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी द्वारा दिए गए प्रवचनों को लिपिबद्ध कर सर्व जगत् के कल्याण के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। लगभग हर बार ही ऐसा होता था कि प्राणप्यारे गुरुदेव प्रवचन शुरु ही करते थे और फिर सोयम् ईश्वर के रूप से सीधी वाणी आना शुरु हो जाती थी। ऐसा एक बार नहीं अनेकों बार हमने आँखों से देखा और कानों से सुना है। इसीलिए इस पत्रिका में दिए जा रहे लिपिबद्ध प्रवचन में कई बार माँ भगवती या बाबा साईंनाथ सोयम् हमें अपना रास्ता बताते हैं। पाठकों की जानकारी व प्रकाशित प्रवचन ठीक से समझने हेतु ये जानकारी दी जा रही है।

– संपादक

अरे तू कौन है?

जो कुछ है सो वासुदेव हैं जो कुछ है सो वासुदेव ही हैं। वासुदेव के बिना कुछ नहीं है। ज्ञान और अज्ञान में भेद क्या है? जब तक हम अज्ञान में रहते हैं। हम समझते हैं, अनेकता है। नाम रूप से हमारी बुद्धि अनेकता के भ्रम में पड़ जाती है। सोचते हैं जगत् में अनेकता है। जीव को साधना करते-करते चलते-फिरते दिखाई देता है कि एक ही सब कुछ है। न कोई जीव है, न जंतु है, न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। एक ही सब कुछ है। इसी को निर्वाण पद कहते हैं। यही तो सच्चा ज्ञान है। इसी से जीव पावन होते हैं। निर्वाणपद की प्राप्ति मनुष्य जन्म के अंदर नहीं हुई तो कुछ नहीं हुआ। अरे तू कौन है? माँ ने ऐसा हाथ रखा है और बोल रही हैं अरे तू कौन है रे? बस सब कुछ खत्म हो जाता है? माँ रह जाती हैं। लाखों जन्म बीत गए साधना करते-करते फिर भी समझ नहीं आई। अरे तू कौन है? एक बार माँ के कहने से जब अंदर की आँख खुल

जाती है तो ऐसा लगता है कि ये शरीर, ये मन, ये बुद्धि सब झूठ है बस एक माँ रह जाती हैं। अरे तू कौन है? ये ज्ञान के चक्र में शक्ति का संचार होता है, अज्ञान चले जाता है, अनेकता चली जाती है। अरे तू कौन है? सारा खेल माँ का है फिर आनंद ही आनंद हो जाता है। माँ का बास अंदर होता रहता है, वो परमानंद स्वरूप है, वो अमृत स्वरूप है, अरे तू कौन है? माँ का द्वार खुल जाता है। सभी ओर सभी दिशाओं में अमृत ठाठें मारता है। अरे तू कौन है रे? है तो एक माई बस एक माई ही हैं। अरे तू कौन है? लोग अपने से पूछते हैं। जब वहाँ से बोला जाता है। अरे तू कौन है? तब शक्ति का संचार होता है। कतरा सागर में मिलकर एक हो जाता है। अरे तू कौन है?

बाबा फरीद तशरीफ लाए हैं। पूछ रहे हैं कुछ समझे इसको। इसी में ही सब कुछ है। कुछ समझे कुछ जाने। अरे तू कौन है? ये महल, ये माढ़िया, ये धन, ये दौलत ये सब कल के लिए है। अरे तू कौन है? ये बाल-बच्चे, ये मेरा, ये तेरा अरे तू कौन है? किसके महल, किसकी माढ़ियाँ, किसके लाखों, किसके बाल बच्चे? जिसे तू अपना बच्चा कहता है वो किसी जन्म में तेरा बाप था। उसने तेरा माँस खाया था रे। कौन किसका रे। उसने तेरी बोटियाँ उड़ाईं। इस जन्म में अब तू उसका बेटा बन कर उसकी बोटियाँ उड़ा रहा है। अरे तू कौन है रे। काहे को माया में फँस रहा है रे। अपने साईं को पहिचान। अपनी माँ को पहिचान। साईं के बिना तेरा कोई नहीं है रे। ये सब यहाँ पर धरा धराया रह जाएगा रे। अरे फकीर की बात मान लो रे। अरे बाबा फरीद की बात मान लो रे जाग रे कब तक सोया रहेगा रे। एक कान से सुनता है और दूसरे कान से निकाल देता है रे। हम इतने दूर से आते हैं। तेरे भले के लिए आते हैं। तेरे को काल के मुख से निकालने के लिए आते हैं। ये सब झूठ है, क्यों झूठ में चल रहा है। पल-भर में उड़ जाएगा रे। जब तेरा दम निकलने लगेगा तब तुझे बाबा फरीद की आवाज याद आयेगी रे। ये सब झूठ है रे। अपना काम है बताना तुम्हारा काम है सुनना। अभी ये आवाज नहीं सुनोगे तो भोगोगे। आखरी समय पछताओगे। अभी तुमने सुन लिया तो अपने

साईं को पा लिया। एक कान से सुन लिया और दूसरे कान से निकाल दिया तो साईं को कैसे पाओगे रे। बाबा फरीद कह रहे हैं अब ये अमृत वाणी तुम्हारे पास है इसमें रहो। अब ये ही वाणी वक्ते नज़ा पर सुनोगे।

हमारी बात दृढ़ है अपनी सुन्न अवस्था में विलीन हो जाओ। इसी अवस्था में जीवों की सेवा करनी चाहिए। जो सुन लेगा उसका भला हो जाएगा जो नहीं सुनेगा तो वो ही जाने क्या होगा। फकीरों का काम है सच्चाई की आवाज़ देते जाना। सच्चाई की आवाज़ बताते जाना। बाबाजी पूछ रहे हैं – मौत, अंधेरा, चौरासी ये चाहते हो या माँ को चाहते हो। अज्ञान चाहते हो या आज़ादी चाहते हो। एक तरफ मौत है चौरासी है। जो इस स्थिति में रहता है उसमें मारपीट होती है। दूसरी तरफ आज़ादी है, ज्ञान है, प्रकाश है। एक तरफ हो जाओ। सारी ज़िन्दगी अगर माया में बिताए तो कुछ हाथ नहीं आयेगा। जो कुछ थोड़ा सा समय बचा है अभी भी सम्भल जाओ, अगर नहीं समझोगे तो तुम्हारी किस्मत फूटी है। जो सत्पुरुषों और वलि-औलियों की आवाज़ नहीं सुनता उसकी किस्मत फूटी है। जो चाहिए उसको अपना लो। जो माया माँगते हैं उसके लिए अंधेरा है, चौरासी है, दु:ख है, तकलीफ है। माँ की तरफ जाएँगे तो ज्ञान है, आज़ादी है, निर्वाण पद है। सत्पुरुषों की बात अगर कोई नहीं सुनता तो उनको तकलीफ होती है। इतनी मेहनत इनके लिए हम करते हैं ये एक कान से सुनते हैं और दूसरे कान से निकाल देते हैं। बाबा फरीद बोलते हैं कि हम भी तंग आ जाते हैं। फकीरों की बद् दुआएँ उनको लगती हैं जो सुनते नहीं हैं। वली-औलियों की आवाज़ तुम्हारे भले के लिए ही आती है। तुमको अंधेरे से निकालती है। इतनी इन पर मेहनत किया तो भी नहीं सुनते माया से चिमटे रहते हैं। जो माया में जाएगा वो चौरासी में, अंधेरे में, गर्भ में जाएगा। अरे तू कौन है? काहे को अंधेरे में जाता है रे। अरे तू कौन है रे।

बाबा ताज और बाबा फरीद दोनों एक हैं। रोज पाँच बार उनका नाम लेना चाहिए।

ॐ बाबा ताजुद्दीनाए नमः।। ॐ बाबा फरीदाए नमः।।
ॐ बाबा ताजुद्दीनाए नमः।। ॐ बाबा फरीदाए नमः।।
ॐ बाबा ताजुद्दीनाए नमः।। ॐ बाबा फरीदाए नमः।।
ॐ बाबा ताजुद्दीनाए नमः।। ॐ बाबा फरीदाए नमः।।
ॐ बाबा ताजुद्दीनाए नमः।। ॐ बाबा फरीदाए नमः।।

बड़े भाव से उनका नाम लेना है। बाबा आशिर्वाद दे रहे हैं। बच्चो! मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ मुझमें और साईं में भेद नहीं है। सब राम ही राम हैं। सब अल्लाह ही अल्लाह है। जो बाबा फरीद और अल्लाह में भेद करता है वो अपना आप गँवा देता है। जो राम है वो अल्लाह है। आप सब हमारे बच्चे हैं। हम चाहते हैं कि यह सच्चाई दुनियाँ भर में फैले। बाबा फरीद कहते हैं कि मैं जो कुछ कहता हूँ, तुम सबकी भलाई के लिए कहता हूँ। जो सुन लेते हैं वो जाग जाते हैं और जो नहीं सुनते वो अभागे हैं। हम तीनों एक हैं। हम तीनों में किसी ने भेद नहीं करना।

" जै मैय्या "

श्रद्धांजली

बाबा फरीद आए नूरे इलाही आया ।
हर सू सच्चाई का इक सूरज है जगमगाया ।।
सोई हुई थी दुनिया फिर से उन्हें जगाया ।
पैगाम मार्फत का हर फर्द को सुनाया ।।
हिन्दू हो या मुसलमां दोनों को इक बनाया ।
बाबा फरीद तू ने सब भेद है मिटाया ।।

या फ़रीद – या साईं

सच्चा भक्त कौन?

पवित्र भक्ति शुद्ध भक्ति से चित्त शुद्ध होता है। भक्ति क्या है ये भी समझने का है। भक्ति अध्यात्म का दूसरा नाम है। **भक्त वही है जिसके अंदर श्री भगवान को पाने के सिवाय दूसरी और कोई इच्छा है ही नहीं। मन में यदि संसारी इच्छा उठ रही है तो हमारी भक्ति सच्ची नहीं है बनावटी है। सच्चे भक्त की पूर्ण रक्षा होती है। सच्चे भक्त के सामने कितनी भी आफतें आती हैं माँ की कृपा का हाथ सदा उसके सिर पर रहता है। सच्चा भक्त एक माँ के आसरे रहता है, माँ के भरोसे रहता है। सच्चा भक्त माँ के सिवाय कुछ चाहता नहीं है। यदि माँ कुछ देना भी चाहती है अपनी भक्ति के सिवाय तो वो हाथ आगे नहीं करता, रोने लगता है माँ मेरे से क्या अपराध हुआ है। माँ मेरे को क्यों दूर कर रही हैं। माँ मैं तुम्हारा हूँ, सदा तुम्हारा रहूँगा। तुम्हारी दया से फिर तुम मुझे माया में क्यों फँसाती हो। माँ मुझे माया से अलग करो। माँ मुझे माया से अलग रखो। माँ मुझे ये माया खा जाएगी। मैं कहीं का नहीं रहूँगा। माँ मैं तेरी दया से वंचित हो जाऊँगा। माँ मुझे ये सब नहीं होना। बच्चे को माया लेकर क्या करना। बच्चे को माँ से मतलब है। माँ चाहिए, माँ के बिना कुछ नहीं चाहिए। ये ही समझने का है।**

माँ और बच्चा अलग नहीं हो सकते, माँ माया उसको दे, जिसको इसकी जरूरत है। **माँ मेरे को तेरे सिवाय किसी चीज़ की जरूरत नहीं है। माँ तेरे सिवाय कोई इच्छा नहीं है। माँ मुझे इस भयानक माया से बचाओ। मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो। माँ मैं तेरे सिवाय शक्ति नहीं माँगता। दुनियाँ वालों को दुनियाँ चाहिये बच्चे को माँ चाहिए। मैं तुम्हारा बच्चा हूँ। यह दुनियाँ, दुनियाँ वालों को दे दो जिसको उसकी चाहना है। बच्चों को इससे बचा कर रखना।** ये है उद्धार का रास्ता। जिसके मन की यह स्थिति हो जाती है उसका उद्धार हो जाता है। बचाव का एक ही रास्ता है, माँ की शरण। जिसने माँ की शरण नहीं लिया वो कैसे बच सकता है। माया उसको

खा जाने वाली है। माया काल का दूसरा नाम है। माया याने काल। इस बात को समझने का है। बच्चे माँ की याद में सदा खोए रहते हैं। उठे तो माँ, बैठे तो माँ, कहीं जाएँ तो माँ, कुछ करें तो माँ। खाते, पीते, सोते, जागते माँ। माँ के बिना उनको कुछ दिखता नहीं है। माँ ही उनके जीवन का आधार होती है। **जिसको माँ का आधार है। एक माँ का आधार है। उसकी रक्षा होने ही वाली है। जो माँ को चाहते हैं माँ उनको चाहती हैं। जो जगत् को चाहता है काल उसको खा जाता है।** काल उसी को खाता है।

माँ के भजन के बिना जीव का उद्धार नहीं हो सकता है। माँ की भक्ति परम सुखदायनी है। जो माँ से सच्ची भक्ति के सिवाय और कुछ माँगता है वो अपने गले में फाँसी डालता है। अपना गला आप घोंटता है। ये फाँसी उसको मीठी लगती है। जो कुछ करो सोच समझ कर करो। जल्दी नहीं करना चाहिए। जल्दी में हानि होती है। मैं जो कुछ समझाता हूँ उसको अपने हृदय में धारण करो। **मेरी भक्ति सब दु:खों से छुड़ाने वाली है। जीव को पावन करने वाली है। जीव को मोह-माया से छुड़ाकर मेरे चरण-कमलों तक पहुँचाने वाली है। भक्ति ना होती तो जग थोथा का थोथा रह जाता। इस जग में कोई मिठास है कोई रस है तो वो भक्ति का रस है। भक्ति ही रस है। भक्ति ही मिठास है। भक्ति के बिना जीवन बिरथा चले जाता है। बहुत ध्यान से सुनो भक्ति से ही जीव मुझे पाता है। सच्ची भक्ति से ही जीव मुझे पाता है। सच्ची भक्ति से ही मैं जीव के काबू में आता हूँ। बच्चे में मेरी जान होती है। बच्चा मेरा होता है। मैं बच्चों का होता हूँ। मैं बच्चे का दु:ख नहीं देख सकती। ये मर्म समझ आ गया तो जानो जीव का कल्याण हो गया। फिर जीव माँ को छोड़कर किसी और को क्यों देखे। एक माँ का होकर जगत् में रहता है। भक्ति मुझे बहुत प्रिय है। भक्ति से ही जीव मुझे बड़ी आसानी से पा लेता है।** शरणागति और भक्ति एक ही चीज़ के दो नाम है। शरणागत नहीं हुआ तो धोखेबाज़ है। शरणागत नहीं हुआ तो भक्ति नहीं है सौदेबाज है। शरणागत हो जाता है तो बच्चा बन जाता है। उसे कोई इच्छा नहीं रहती है। माँ का नाम सदा हृदय में चलता

रहे। ध्यान माँ के चरणों में लगा रहे। बच्चों की भक्ति बनी रहे बस और क्या चाहिए काम तो बनने वाला है। ये स्थिति नहीं हुई तो जीव आडम्बर में फँसा रहता है। माया बड़े-बड़े आडम्बर रचती है उसके गले में फाँसी डालने के लिए। यदि वो इन आडम्बरों में रह जाता है तो माया उसके गले में बड़ी-बड़ी फाँसी डाल देती है।

जो मेरा हो चुका है जिसको मेरे चरणों में सच्ची प्रीति है माया उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती है क्योंकि वो मेरा बच्चा है। मेरे बच्चों के साथ कोई बुरा नहीं कर सकता है किसी भी लोक में। तीनों लोकों में किसी में हिम्मत नहीं है मेरे बच्चे की ओर टेड़ी आँख उठाकर देख भी जाए। जैसे-जैसे श्री महाराज बोल रहे हैं। श्री भगवान बैठे हुए हैं बच्चे को गोद में लिया हुआ है और थोड़ी-थोड़ी देर के बाद इधर-उधर देखते हैं कोई मेरे बच्चे की ओर टेड़ी नज़र से तो नहीं देख रहा। तीनों लोकों में तो कोई है ही नहीं जो मेरे बच्चे को टेड़ी नज़र से देखे। उसका मल्यामेट कर दूँगा। उसकी हस्ती मिटा दूँगा। राह देखते जा रहे हैं। कोई तीनों लोकों में ऐसा तो नहीं है जो मेरे बच्चे की ओर मेरे नन्हे मुन्ने की हानि करने जा रहा है। बच्चा मेरी गोद में है। तीनों लोकों में ऐसा-ऐसा करके देख रहे हैं। कोई ऐसा तो नहीं है जो मेरे बच्चे की ओर टेड़ी नज़र से देखता हो। मैं उसका मल्यामेट कर दूँगा। छोड़ूँगा नहीं। बच्चा अपनी रक्षा आप नहीं करता है वो करना भी नहीं चाहता। उसको अपनी रक्षा करने की जरूरत भी नहीं है। क्यों जरूरत नहीं है? क्योंकि उसे मुझ जैसी माँ मिल चुकी है। वो अपने भरोसे नहीं रहता। जिसको एक मेरा आधार है ऐसा बोलते-बोलते अपने बच्चे को सीने से लगा-लगा कर बोल रहे हैं। जिसको एक मेरा आधार है उसका कोई बाल भी बीका कैसे कर सकता है। ये जान लिया तो फिर कोई माया में नहीं फँसेगा। बस ये ही बात समझने की है। माँ या जगत् दोनों में से एक को चुनना है। जो माँ का हो चुका है अपने आप को जिसने माँ के हवाले कर दिया है वो बच्चा है। जो जगत् का है सो बड़ा है। दोनों में मेल नहीं है। इस बात को अच्छी तरह से जानना है दोनों में मेल नहीं है। Both are two ends of pole and they never meet.

भगत् कल्पतरु प्रंत हित कृपा सिन्धु सुख धाम ।
सोई निज भक्ति मोहे, देयो कृपा कर राम ।।

जो कुछ मैंने बोला है उसका सही अर्थ है जो कुछ तुम बोल रहे हो, उसका अर्थ मैंने विस्तार से तुमको बता दिया है। ये जीवन में लाओगे तो तुम्हारा जीवन धन्य हो जाएगा। तुम्हारी जन्म-जन्मांतर की बिगड़ी बन जाएगी। ये समझ में नहीं आया, खाली मुँह से बोलते रहें, कोटि-कोटि जन्म बोलते रहो कौन सुनेगा, कोटि जन्म चिल्लाते रहो कौन सुनेगा तुम्हारी बिगड़ी नहीं बनेगी। कोटि जन्म चिल्लाते रहो, बोलते रहो कौन सुनता है।

"जै मैय्या"

दया सागर साईं

आठों पहर साईं अन्दर से देखते हैं ।
तू जग का है या उन का यह सद ही पेखते हैं ।।
वो हैं दया के सागर मंगल के धाम हैं वो ।
जो कुछ है जान पड़ता जानो तमाम हैं वो ।।
उन से नहीं अलग तू यह जान ले रे भाई ।
जितनी भी है यह रचना उन में है सब समाई ।।
हर घट में आप बस कर सब कुछ करा रहे हैं ।
यह लेख जो तू लिखता वो ही लिखा रहे हैं ।।

"ॐ श्री साईं"

मैं जंत्र तू जंत्री

जो एक बार सच्चे मन से पूर्ण की आराधना करना शुरु कर देता है। फिर वो पीछे मुड़ कर नहीं देखता है। आगे ही आगे जाता है। मुझ पूर्ण की आराधना ही सच्ची आराधना है। जब जीव सच्चे मन से मुझ पूर्ण के अर्पित हो जाता है, तो मेरा खेल उसके अंदर से शुरु हो जाता है। अब वह नहीं रहता मैं उसके अंदर से सारा कार्य करती हूँ। सभी प्राणी मैंने इसीलिये बनाये हैं कि जगत् को चलाने के लिये अलग-अलग भिन्न-भिन्न सेवा की जरूरत है। जीव खुद मेरी सेवा ठीक नहीं कर सकता, जब वो सच्चे मन से मेरे अर्पित हो जाता है तो मैं सोयम् आप उसके अंदर बैठ कर सेवा करती हूँ फिर मेरा जगत् ठीक चलता है फिर हर कार्य ठीक होने लगता है। यदि जीव अर्पित नहीं होता तो सेवा का कार्य ठीक नहीं हो सकता। वो अपना अहम् उठा लेता है। सेवा करने के बजाए वो अपने को बनाने की सोचता है। अपने अहम् को फैलाने की सोचता है। बस यहाँ पर सब बिगाड़ हो जाता है। मैंने अलग-अलग भिन्न तरह के जीव बनाये हैं। तरह-तरह के लोग बनाये हैं कि अपनी-अपनी जगह सब सेवा करें, वह अहम् उठा कर सेवा को वो भूल जाते हैं अपने झूठे अहम् में गुम हो जाते हैं। उसी को बढ़ाने में लग जाते हैं। ये ही सब बीमारी की जड़ है। इसी में शरणागति का सबसे बड़ा महत्व है। सभी जीव यदि मुझे काम करने दें, कार्य करने दें, तो यह जगत् स्वर्ग लोक से भी, ब्रह्म लोक से भी अच्छा हो जाए परन्तु अज्ञान हमें पकड़ लेता है। चार दिनों के लिये यह शरीर मिला है इसी को ही सब कुछ समझ लेते हो, चार दिनों के इस जीवन में मौज़-मज़ा चाहते हो, भले ही इस कारण से उसके लाखों जन्म खराब हो जाएँ। कोई समझाता है तो बुरा लगता है। अरे तेरे लाखों जन्म खराब हो जायेंगे कुछ तो समझ, यह शब्द सुनना ही नहीं चाहते, इसको माया कहते हैं। अध्यातम् में आकर भी यह चाहते हैं कि हमें कोई बोले खूब धन जमा करो, खूब माया जमा करो, खूब दौलत जमा करो, दुनियाँ में बड़ा बनो फिर तो खुश है फिर तो वाह-वाह करते हैं कैसा सुन्दर रास्ता बताते हैं और यदि कोई

बोल दे अरे सच्चाई में रहो इस झूठे जगत् में रह कर लाखों जन्म बीत गये बस उन पर नाराजगी आ जाती है। ये ही समझने का है। दुनियाँ में अपना सच्चा हितकारी कौन है। जो सच्चाई दिखाता है। जो हमें बार-बार दिखाता है देख समझाते जा रहे हैं तुझे भी चार दिन के बाद जाना है उधर की तैयारी कर। यह चार दिन कैसे भी गुजर जायेंगे आगे की तैयारी कर। माया में फँसा जीव कभी सोचना भी नहीं चाहता कि तुझे एक दिन मरना है। कोई उसे याद भी दिला दे कि तुझे एक दिन मरना है तो भी उसे अच्छा नहीं लगता है। जो कुछ है सो वो एक है। एक का है। एक में हैं सदा एक का रहेगा। तुम उस एक की किसी वस्तु को अपना नहीं सकते। सब कुछ उस एक का है। तुम उस एक की किसी भी वस्तु को अपना नहीं सकते हो। प्रयोग कर सकते हो जरूरत के अनुसार, अपना नहीं सकते। अध्यातम् है ही यह कि शुद्ध मन से ये जान कर कि सब कुछ उस एक का है किसी चीज़ को अपनाना नहीं, जरूरत के अनुसार प्रयोग हर चीज़ का कर लेना साधो, साधो इसके बिना साधना नहीं होती। अपनाना शुरु किया तो फिर कोई अंत ही नहीं है। फिर कहीं भी जाकर उसका अंत नहीं होता। मन एक से शुरु करता है एक चाहिये फिर दस चाहिये, फिर हजार, फिर लाख, फिर करोड़, फिर अरब फिर खरब फिर दूसरी दुनियाँ, फिर और कोई दुनियाँ, फिर ये, फिर वो बस नहीं करता। साधना नहीं हो सकती। जीवन ठीक किए बिना साधना नहीं हो सकती इसीलिये भगवान श्री रामकृष्ण देव जी ने, (जितने भी उनके साथी थे, १७ लड़के थे) किसी को दुनियाँ में नहीं जाने दिया उनसे माँ की सेवा कराई। हमारे बाबा कहते हैं जगत् में रहकर माँ की सेवा करो, गृहस्थ जीवन को माँ की सेवा का साधन समझना है। अपने अहम् को बढ़ाने की बजाए गृहस्थ जीवन को माँ की सेवा का साधन समझना चाहिये। जगत् में दु:ख ही दु:ख है चारों ओर जिधर देखो दु:ख ही दु:ख है। सुख कहीं दिखता नहीं परन्तु जब हम खुद ही दु:ख का सामान जमा कर रहे हैं तो सुख कहाँ से मिलेगा। बोयेंगे जौ तो गेहूँ कहाँ से मिलेगा? जब हम सत् को छोड़ कर असत् का सामान जमा करेंगे तो हमें सत् कैसे मिलेगा? लेकिन जो समझाते हैं तो बुरा मनाते हैं, गुस्सा आता है परन्तु जो कुछ हमने

बोया है वो तो फल मिलेगा ही। चाहे कोई खुशी से ले या नाराजगी से। जो हरिनाम का बीज बोता है, हरिनाम लेता है उसके भाग्य जग जायेंगे, जो अपनी इच्छा की पूर्ति में लग जायेगा वो अपने किये का फल भोगेगा। जो आदमी सिर से पैर तक माया में फँसा हुआ है उसके सामने अध्यातम् की चर्चा करना फिज़ूल है। उसे अध्यातम् नहीं दिखता है। उसके मन पर परदा पड़ा हुआ है भजन करो, भजन आनंद लो, आनंद लेना ही है, खुशी लेनी ही है तो भजन आनंद लो, भजन का आनंद लो। जो रस भगवान के भजन में हैं वो विषय आनंद में नहीं है। जिस काम के लिये आये हो उस काम को पूरा करो। अधूरा मत छोड़ो। अधूरा छोड़ने में खतरा है। सकाम भाव की तरफ मन को मत जाने दो। उससे हमारा आगे बढ़ना बन्द हो जाता है। हम वहीं के वहीं रह जाते हैं। मन की डोर कस कर रखो, मन को ढीला छोड़ा तो वो कहीं का भी नहीं रहेगा। बर्बाद करके छोड़ेगा। साधु बनो – गृहस्थी साधु। खुद भी साधना करो, दूसरों में भी प्रचार करो। अपने जीवन से दूसरों में यह मिसाल कायम करो। जो कुछ प्रचार करो पहले उसमें रहो, फिर प्रचार करो। यदि हम खुद सच्चाई में नहीं रहेंगे और दूसरों में प्रचार करेंगे तो उसका उल्टा असर आयेगा। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है। भूले हुओं को माँ की सच्ची राह बताना, जो कुछ माँ हमें बता रही है वो दूसरों को बताना, इससे बढ़ कर दूसरी और कोई सेवा नहीं है परन्तु अपनापन निकाल कर यह सेवा करनी चाहिये। अहंकार नहीं करना चाहिये। हम खुद अज्ञानी हैं, हम पूर्ण रूप से चले नहीं हैं हम कैसे चला सकते हैं। हम दीन होकर माँ का जंत्र बनकर फिर सेवा का कार्य कर सकते हैं। जो कुछ मैं बताता हूँ वो ध्यान से सुनो, पढ़ो, लिखो उसमें अपना जीवन ढालो। जब तक गंगा बह रही है प्यासे काहे को रहते हो? जब तक मैं ज्ञान गंगा बहा रहा हूँ अमृत पीते जाओ। ये ही तुम्हें समझाना है। ये ही समझाने के लिये बार-बार आता हूँ, जब तक यह ज्ञान गंगा बह रही है अमृत पीते जाओ। जब तक यह ज्ञान गंगा बह रही है अमृत पीते जाओ। ये ही समझाने का है।

" जै मैय्या "

उठो जागो

जनम् जनम् माया में बीते
काहे की अब देरी है ।
उठो जागो सोए जीवो
काली माँ की फेरी है ।।

मोह माया को त्यागो जीवो मोह माया का काम नहीं।
अन्दर घर में आओ जीवो बाहर सुख को नाम नहीं ।

कलि काल पर काली नाचें हीं हूँ हाः हीं हूँ हाः ।
इसी ताल में सृष्टि नाचे हीं हूँ हाः हीं हूँ हाः ।
सब रचना माई संग नाचे हीं हूँ हाः हीं हूँ हाः ।
सूरज नाचे चन्दा नाचे हीं हूँ हाः हीं हूँ हाः ।
देवी देव सभी हैं नाचें हीं हूँ हाः हीं हूँ हाः ।

कलि काल पर काली नाचें
योगनियों के साथ ।
जै जै महाकालिकामाई
सब जग तेरो हाथ ।।

"ॐ श्री साईं"

साईं भोलेनाथ

जुग-जुग में शिव भक्ति किसने करके सद्गति नहीं पाई। शंकर भोलेनाथ की दया से सर्व जगत् उपजा हुआ है। अंत में उन्हीं में समा जाता है। सभी ऋषि-मुनियों ने उनका भजन किया और सब कुछ पा लिया। वो दाताओं के दाता हैं। उनकी जो जरा सी भी भक्ति करता है उनका मन करता है सब कुछ दे दूँ। देते हैं तो छप्पर फाड़कर देते हैं भोलेनाथ। उनका भजन करने के लिए भोला बनना पड़ता है। जिसके मन में होशियारी है, चालाकी है, सयाने हैं वो उनके निकट भी नहीं जा सकते। उनके निकट जाने के लिए बच्चा बनना पड़ता है। जगदीश्वर भोलेनाथ की शरण में आकर जीवन व्यतीत करो। जब कोई भाव से उनका नाम पुकारता है तो उनकी समाधी टूट जाती है। कौन मेरा भक्त पुकार रहा है? कौन मेरा भक्त दु:खी है? आज जगत् की इतनी हालत बिगड़ी हुई है वो ही सम्भाल सकते हैं। वो ही हमारे प्यारे बाबा के रूप से प्रगट हुए। उनमें और बाबा में भेद नहीं है। एक नन्हा बच्चा ही भाव से पुकार सकता है। बड़े तो अपनी वासनाओं की पूर्ति करते हैं। जो सौदेबाज आता है उनकी भी झोली भर देता हूँ परन्तु मुझे अच्छा नहीं लगता जो मुझ अविनाशी से नाशवान वस्तुएँ माँगते हैं। जो मुझे निष्काम भाव से पुकारते हैं तो दौड़े चले आता हूँ। बच्चे बनकर मेरा भजन करो बड़े बनकर नहीं। बच्चे बन जाओ। मैं यहाँ बच्चों के संग खेलना चाहता हूँ। मेरी खुशी इसी में है कि तुम मेरे बच्चे बन जाओ यदि तुम मेरे बच्चे बन जाओगे तो मैं गर्म हवा भी तुम तक नहीं आने दूँगा।

मुझे पाना आसान नहीं है। केवल एक ही रास्ता है मुझे पाने का। जो अपने को मेरा बना लेता है मैं उसका हो जाता हूँ। वो आसानी से इस भव से पार हो जाता है। शंकर नाम लेने से इस भव से पार हो जाता है। शंकर नाम लेने से ही मन के सभी विकार भागने शुरु हो जाते हैं। सबको माया ने अपनी फाँसी में दबा रखा है। ऐसा लगता है किसी को अपनी मृत्यु याद ही नहीं आ रही है। इसीलिए

सभी अमंगलों से घिरे रहते हैं। मेरी कृपा ही मुख्य है। जगत् में जो कुछ होता है मेरी कृपा से होता है। मैं तुम्हें मिल गया तो तुम्हें सब कुछ मिल गया। मेरे सिवाय सब मिथ्या है। मिथ्या को पाने से हाथ क्या आएगा। मेरे बन कर रहो। मेरे भजन में सदा मन लगाए रखो। पल-पल तुम्हारी रक्षा होएगी ही। मैं सबके अंदर रहता हूँ, सब मेरे अंदर हैं। जो वर्ष भर में शिवरात्री की एक रात को ही भजन करता है वो भी मेरी दया से पार हो जाता है। मैं दया का सागर हूँ। मैं अपने बच्चों के पाप क्षण भर में नष्ट कर देता हूँ यदि वो सच्चे मन से मेरे अर्पित हो जाए तो। जो भाव से दूध, जल, बेलपत्र चढ़ाता है वो मेरी प्रसन्नता को पा लेता हैं। "**ॐ नमः शिवाय**" जो ये पाँच अक्षरीय नाम लेता है वो बड़ी आसानी से इस भव से तर जाता है। मैं पल-पल उनकी रक्षा करता हूँ। सदा मेरे बच्चे बन कर रहो। जगत् के मत बनो। मेरे बच्चे जिन्होंने सच्चे मन से मेरा आसरा लिया वो बड़ी आसानी से पार हो गए। बड़े रहोगे तो माया तुम्हें दबोच लेगी। तुम्हारा जन्म-मरण का सच्चा साथी एक मैं ही हूँ। याद रखो।

" जै मैय्या "

श्रद्धा के फूल

या ताज तेरी मेहर के मौहताज हैं सभी ।
जिस को लिया है हाथ में छोड़े न तू कभी ।।
इस चश्में दिल में मूरत तेरी बसी रहे अब ।
सजदे करें हमेशा तेरा ही नाम लें लब ।।
रहमत तेरी से हम भी पा जाएँ अपने घर को ।
घर को वो ही पाएँ जो अपनाएँ तेरे दर को ।।

या ताज – या साईं

गृहस्थियों के लिए
पँच कल्याणकारी महान तीर्थ

१) जहाँ तक बन सके श्री भगवान की तस्वीर के पास अखण्ड ज्योत जलती रहनी चाहिए।

२) महीने में एक बार श्री बजरंगबली और गणपतिजी की मूर्ति को सिंदूर और तेल का चोला जरूर चढ़ाना चाहिए।

३) प्रातःकाल उठकर बेजुबान जीवों को कुछ चाँवल की कनकी जरूर डालनी चाहिए।

४) सुबह शाम श्री भगवान के सामने साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करके अपने आपको शुद्ध मन से उनके अर्पित करना चाहिए।

५) श्री भगवान की पूजा और सत्संग में सदा सिर ढककर बैठना चाहिए।

"ॐ श्री साईं"

दुखों से छूटने के तीन अचूक उपाय

१) अखण्ड नाम सिमरन।

२) श्री विष्णु सहस्रनाम का प्रतिदिन पारायण।

३) श्री साईं गीता का साप्ताहिक या मास पारायण।

"ॐ श्री साईं"

माई गोद में वास

सच्चाई में दो क्षण के लिये भी चले जाएँ तो वो कोटि जन्मों की साधना के बराबर है। भूलो मत जो सदा सच्चाई में रहता है वो अमृत पीता है। तुम सब झूठ हो, एक मैं सत् हूँ, तुम हो ही नहीं इसको दृढ़ करो। तुम कुछ हो ही नहीं। सच्चाई में एक पल भी रहना कोटि जन्मों की साधना के बराबर है। जो कुछ है मैं हूँ। माँ मैं कुछ भी नहीं हूँ। माँ सब तू है। माँ वारी जाती है ऐसे बच्चों पर। माँ वारी जाती है। माँ माँ माँ माँ। कितना मीठा शब्द है। कितना मधुर मीठा शब्द है। सदा माँ को याद करते रहो। जैसे एक नन्हा बच्चा माँ के बिना नहीं रह सकता ऐसे तुम भी माँ के बिना मत रहो। माँ माँ माँ माँ अनुभव करो माँ हाड-माँस में नहीं माँ अंदर है। माँ की कम्पन सारे वातावरण में अनुभव करो। माँ माँ माँ माँ। अनुभव करो माँ की गोद में हो। माँ माँ माँ माँ।

सुनो जीवन ही सब कुछ है। जीवन में माँ नहीं आई जीवन व्यर्थ बीत गया। जीवन ही सब कुछ है। जीवन में माँ आ गई हमें सब कुछ मिल गया। जीवन में माँ नहीं आई माया हमें नचा रही है। भूलना नहीं माँ आ गई तो माया की जगह नहीं है। माया से कोई लड़ नहीं सकता। याद रखो, माया से कोई लड़ नहीं सकता। एक बच्चा ही माया से लड़ता है। एक बच्चा ही माया से जीतता है। क्यों? बच्चे को माँ का आधार है। माँ के आसरे जीता है। माँ सब कुछ है। बच्चा कुछ नहीं है इसीलिये बच्चे की विजय होती है। बड़े की हार होती है। भूलना नहीं आज तक बड़ा कभी जीता नहीं है। बड़ा अपनी लड़ाईयाँ आप लड़ता है। बच्चे की लड़ाईयाँ माँ लड़ती है। बच्चे को केवल माँ का आधार होता है। अपनी लड़ाईयाँ माँ को लड़ने दो फिर देखो क्या होता है। The results never fail. जब भगवती

माँ लड़ाईयाँ लड़ती है तो जीत किसकी होती है यह सोचने की जगह नहीं है। अपनी लड़ाईयाँ माँ को लड़ने दो। माँ ही सब कुछ है। तुम कुछ नहीं हो। इस सच्चाई को समझना है।

जो कुछ बच्चे से होता है माँ कर रही है। माँ का खेल होता है। बच्चे का नहीं। बच्चा माँ की गोद में आनंद मनाता है। खेलता है। बच्चे का नहीं माँ का खेल होता है। माँ के खेल में ही तो आनंद है। बच्चा माँ की गोद का रस अमृत लेता है। माँ की गोद में किलकारियाँ मारता है। माँ की गोद का आनंद लेता है। बच्चे को अध्यातम् की समझ नहीं होती। बच्चे को वही समझ होती है कि मेरी माँ है बस। यह भी नहीं याद मेरी माँ कितनी बड़ी है। माँ की गोद का रस पीता है। उसी रस में खोया रहता है। इसी को समझना है।

"जै मैय्या"

कान्हा तुझे प्रणाम!

हे हरि विट्ठल माधव तुझ को बार बार पर्नाम ।
आनन्देश्वर आनन्ददाता जै जै जै घनश्याम ।।

जै नारायण कृष्ण मुरारी भक्ति दो निष्काम ।
गोपीवल्लभ गिरिवरधारी जै राधा के श्याम ।।

सुन्दर छबि बसी तोरी मन में मुख में तेरो नाम ।
जै चेतन जै कृष्ण कन्हाई जै सीता के राम ।।

"ॐ श्री साईं"

सुन मेरी आवाज़

अंदर की आवाज़ को सुनना चाहिये। साधारण जीव के लिए अंदर की आवाज़ सुनना मुश्किल होता है। दृढ़ करना चाहिए गुरु की आवाज़ अंदर से आ रही है। अंतरंग की आवाज़ हम अपने जतन से नहीं सुन सकते वो आवाज़ गुरु की कृपा से बड़ी आसानी से सुन सकते हैं। वो आवाज़ गुरु की आवाज़ है। वो आवाज़ गुरु की आवाज़ ही नहीं है हमारे सबके अंदर की आवाज़ है। हमारे अंदर की आवाज़ हमें सत्मार्ग बताती है। ठीक मार्ग पर चलाती है। The Guru's voice is the voice of our own conscious. हमारी अपनी conscious ही गुरु की आज्ञा में रहने की चुनौती देती है। होता क्या है, जब जीव संसार में कुछ भी कर्म करता है उसमें भले और बुरे दोनों प्रकार के कर्म आते हैं। उनमें से जब कोई गलत कर्म करता है तो अंदर की आवाज़ उन्हें जरूर कहती है, यह गलत कर्म है मत करो। दूसरी बार फिर कहती है, दो बार कहती है। जीव माया के वश में रहता है नहीं सुनता, तो फिर वो आवाज़ सदा के लिए बन्द हो जाती है। जीव फिर उल्टा का उल्टा चलता है फिर वो जो कर्म करता है सब उल्टा होता है। गुरु अंदर से समझाते हैं। जब वो नहीं सुनता तो फिर वो सदा के लिए चुप हो जाते हैं फिर उसको अंदर से guidance मिलनी बन्द हो जाती है। उसको वो ही आवाज़ गुरु के मुख के द्वारा ठीक रास्ते पर चलाने का जतन करती है। गुरु वाणी की इतनी कीमत है। जो आत्मा हमारे अंदर है वो ही आत्मा बाकी सबके अंदर है। जो आवाज़ हमें अंदर

आत्मा से मिलती थी सत् मार्ग पर चलने के लिए, वही आवाज़ अब गुरु के मुख से मिलती है। उसको सुनने से फिर हम ठीक रास्ते पर आ सकते हैं।

हमारी आत्मा ही हमारी सच्ची गुरु है। हमने आत्मा की आवाज़ ना सुन कर आत्मा का अनादर किया। आत्मा की आवाज़ बन्द हो गई। माया में भटक गए फिर वो आवाज़ गुरु के रूप से मिलनी शुरु हुई। आत्मा, परमात्मा और गुरु एक ही शक्ति के तीन नाम हैं। हमने अंतरात्मा की आवाज़ नहीं सुनी आत्मा ने बोलना बन्द कर दिया। हम रास्ता भटक गए, गलत रास्ते चलने लगे, गुरु को ईश्वर को दया आई फिर हमारी ही आवाज़ गुरु मुख से सुनाई देने लगी। हम पहले एक बार गलती कर चुके हैं। अंतर आत्मा की आवाज़ नहीं सुनी, तभी भटक रहे हैं। इस माया नगरी में गुरु की आवाज़ को अंतरआत्मा की आवाज़ जान कर हमें जागृत हो जाना चाहिए। जैसे कल बताया था कि मानव चोला किसलिए मिला है? सदा मनन करना चाहिए और दोनों तरह का विचार रखकर मनन करना चाहिए। हम ईश्वर के अर्पित होकर ईश्वर की वाणी पर मनन करेंगे तो हमारे जीवन में मंगल ही मंगल हो जायेगा यदि हम ईश्वर का भजन नहीं करेंगे माया का भजन करेंगे तो कितनी भयानक अताब है, तकलीफ है इधर भी देखना है, उधर भी देखना है। यहाँ भी आनंद है आगे भी आनंद है। अरे और कितनी मुसिबतें हैं पूछो मत दृढ़ करो गुरु की आवाज़ किसी और की आवाज़ नहीं तुम्हारी अंतरआत्मा की आवाज़ कह रही है। मेरा गला मत घोटो मेरा सांस घुटते जा रहा है मेरा दम घुटते जा रहा है, उधर से नहीं इधर से कह रही हूँ। मुझे इस भयानक अग्नि से निकालो मुझे आज़ाद करोगे तो मैं भी आज़ाद हो जाऊँगी। गुरु की आवाज़ हमारी अंतर आत्मा की आवाज़ है, जो हमें जगा रही है, चेतावनी देकर जगा रही है। बोल रही है, भले पुरुष! उठ कब तक मोह की निद्रा में सोया रहेगा। गया समय हाथ नहीं आयेगा, गए समय के लिए तुझे सिर पकड़ कर रोना पड़ेगा। उठ आ जाग जो बीती सो बीती अब एक-एक स्वास की कीमत लगा अपने घर वापिस जाना है। कब तक जलती अग्नि में रहेगा। देख माँ बुला रही हैं, माँ की आवाज़ क्यों

नहीं सुनता। जब तक तू माया को छोड़ेगा नहीं सच्चा भजन हो नहीं सकता है। ऐसा लगता है कि तू दोनों कानों में अंगुलियाँ दे कर ज़िद से खड़ा है कि मुझे अंतर आत्मा की आवाज़ नहीं सुननी है। मुझे बाहर फैलना है मुझे बाहर बड़ा बनना है। कब तक कानों में अंगुलियाँ देकर रखेगा?

महाराज बोल रहे हैं जिद की भी कोई हद होती है। बोल रहे हैं गुरु कृपा से देखो तो अंदर से मैं ही आवाज़ देता हूँ, एक बार, दो बार नहीं सुनते तो फिर सदा के लिए बन्द हो जाती है। वो ही मेरी आवाज़ गुरु रूप से आ रही है क्योंकि गुरु करुणा के स्वरूप होते हैं। वो ही आवाज़ बारह बरस से मिन्नत कर रही है, तुम्हारे हाथ पैर जोड़ रही है, तुम माया को छोड़ो मुझे अपनाओ पार हो जाओ। तुम सोच कर बैठे हो कि माया को नहीं छोड़ेंगे। सारी फ़साद की जड़ तो माया है अभी भी समझ लो, जितनी गई सो गई। बड़ा सुन्दर दृश्य दिखा रहे हैं – एक जीव दिखा रहे हैं जितनी देर महाराज वाणी बोलते हैं दोनों अंगुलियों से कान बन्द कर लेता है। जाने का समय आया यमराज ले गए महाराज के पास वहाँ जैसे महाराज को देखता है तो फिर अंगुलियाँ रख देता है कानों में। यमराज हाथ हटाता है तो भी नहीं सुनता। अब तेरे को अंगुलियाँ निकाल कर हिसाब सुनना पड़ेगा। वहाँ धरती पर अंगुलियाँ नहीं देता तो कितना जीवन उठ जाता। गुरु चरणों से प्यार ही नहीं तो छुटकारा कैसे होए। माया के बारे में मुझे मत बोलो माया को तो नहीं छोड़ेंगे और कोई छोटी मोटी सेवा हो तो बताओ, कर लेंगे।

गुरु महाराज सबको फिर बिना नाराज़ होकर बोलते जा रहे हैं। वो कानों से अंगुलियाँ निकालता नहीं है। चलते जा रहा है कहानी अधूरी है। कोई एक भी निकल जाए तो हमारी मेहनत सफल हो जाएगी। गुरु की आवाज़ हमारी अपनी अंदर की आवाज़ है। सुन ले, जग जा, देरी का समय नहीं है जग जा। जग जा। जग जा।

'' जै मैय्या ''

कलाम-ए-साईं

(श्री साईं गीता में से)

ऐ ज़ात-ए-मुकद्दस हम दीदार तेरा चाहते।
सब पीर वली अल्लाह हैं हमद तेरी गाते।।

ये ज़िक्र तेरा करना तेरी ही रहमत है।
वरना ज़िन्दा रहना कूफ़त है ज़हमत है।।

हम खो जाएँ तुझ में हम पे ये इनायत हो।
सदके जाएँ तेरे तुझ पे ही इतायत हो।।

हम याद करें तुझ को ये तेरी इनायत है।
बन्दों को अपनाना ये तेरी रिवायत है।।

"ॐ श्री साईं"

मुकद्दस – पवित्र,
वली – सत्पुरुष,
हमद – गुणवाद,
कूफ़त – तकलीफ,
ज़हमत – दुःख,
इनायत – कृपा,
इतायत – अर्पित होना,
रिवायत – तारीफ़

सिमरन कर ले प्राणी

काली बोल काली बोल, बोल काली बोल ।
महाकालिका जग प्रतिपाली बोल ।।

जैसे हम ये धुनि कर रहे हैं, देवी भगवती बड़ा सुंदर दृश्य दिखा रही हैं। हमारी आँखों के सामने दिख रहा है। गुंडे, राक्षस हमारे पर हमला कर रहे हैं। महाकाली उनको पीछे धकेल रही हैं। मार-मारकर माँ की जोगनियों ने उनको धकेल कर पीछे फैंक दिया। जैसे हम काली बोल काली बोल करते जा रहे हैं उनको पीछे धकेलती जा रही हैं। काली बोल काली बोल। मेरे नाम की धुनि सदा अंदर चलती रहे तो मेरा पवित्र नाम जीवों के आस-पास फैल जाता है। कोई अपवित्र अमंगल अंदर घुस नहीं सकता है। बच्चा बनकर माँ की दया को पुकारते जाना है। जब हम माँ का नाम लेते हैं तो हम माँ की दया को पुकारते हैं। माँ हमें अमंगलों से बचाओ। नाम रक्षा को लाता ही है। नाम की धुनि शुरु होते ही रक्षा का हाथ साथ आता ही है। एक जीव बैठा है, जो राम राम राम राम करता है उसके ऊपर रक्षा का हाथ आ गया। माँ कितना कुछ बता रही हैं फिर हम माँ का नाम न लें तो हम कितने अभागे हैं। नाम से ही यह जादू-टोना निकलेगा। नाम लेते जाएँगे तो सदा रक्षा होती जाएगी। नाम का धन कमाओ। नाम से मानव की इच्छा पूरी होती है। नाम का अभ्यास करना चाहिए।

नाम और रूप में भेद नहीं होना चाहिए। नाम लेने से बात बनती है। नाम की मिठास को अनुभव करो। नाम की मिठास अपने अंदर देखो। नाम लेने का सबसे अच्छा तरीका है अंदर ही अंदर जाप करना। अंतर आत्मा ही माँ हैं, राम हैं, भगवान हैं। नाम के अभ्यास से कोटि जीव इस भवसागर से पार हो गए हैं और होते जाएँगे। पतित से पतित जीव जिसने कितने कत्ल किए, कितने जीव डाकू थे, वो भी बच गए। नाम में इतनी शक्ति है। मैं भी जब शिर्डी में था तो

अस्सी बरस तक एक बार भी राम नाम बंद नहीं किया। तुम्हारा मेरा नाता है राम नाम के नाते। नाम का अभ्यास करते हैं तो तुम्हारा हमारा संबंध है यदि नाम नहीं लेते तो तुम्हारा हमारा संबंध नहीं है। जो नाम जिसको दिया है उसी पर दृढ़ता से चलना है। मैंने तुम सबको कान में मंत्र दिया है। **याद रखो।** गुरु और शिष्य का संबंध नाम से है यदि शिष्य नाम का अभ्यास नहीं करता तो वो माँ को नहीं पाता। उसका माँ के साथ संबंध नहीं है यदि तुम नाम का अभ्यास नहीं करते और सेवा करते हो तो वो सेवा किसी काम की नहीं है। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है। बहुत ज्यादा बोल कर भी क्या करना। बच्चे बनो, माँ का नाम लो। माँ को पुकारो। मेरे खज़ाने भरपूर हैं, मेरे खज़ाने में इससे बढ़कर कीमती मोती और कोई नहीं है। दिन-रात माँ को पुकारो, माँ को पुकारोगे तो माँ की दया को पाओगे।

" जै मैय्या "

जै गुरु शक्ति

सदा सदा ही सिमरिये गणपति दीनदयाला।
भक्तों का कल्याण करें दुर्गा माँ के लाला।।
श्री गणपति की दया से सिमरें आदि शक्ति।
हे देव प्रदा करो गुरु शक्ति में भक्ति।।

जगदम्बे माँ सरस्वती भजिये बारम्बार।
मैय्या अपनी वाणी से जग का करें उद्धार।।
गुरु शक्ति में साचा प्रेम कीजो माँ प्रदान।
गुरु शक्ति चमकें घट माहीं कोटि सूर्यों समान।।

"ॐ श्री साई"

दूसरों के लिए जीओ

"धर्म की रक्षा के लिए और अधर्म का नाश करने के लिए मैं इस सेवा में लगा हुआ हूँ।" क्या तुम मेरी सेवा में मेरा हाथ नहीं बँटाओगे? गौतम बुद्ध के ६ शिष्य थे उन छ:ओ ने सारे जगत् भर में बुद्ध धर्म चलाया। खाली *dedication* की जरूरत है। पूर्ण विश्वास और उत्साह की जरूरत है। जीवन की काया बदल सकती है इतना कुछ भण्डार मैंने तुम लोगों को दिया है। जीवन की काया पलट सकती है। ये ही तुम्हारे जीवन का ध्येय होना चाहिए। खुद भी जीओ दूसरों को भी जीने दो। दूसरों के लिए जीना जरूरी है। जो केवल अपने लिए जीता है वो पार नहीं हो सकता। अध्यात्म की निशानी क्या है? हम अपने लिए जी रहे हैं या दूसरों के लिए। दिन-रात जग के कल्याण में लगे हुये हैं। दिन-रात जग के कल्याण का सोचते हैं। *This is the higher life.*

इस बात को दृढ़ करना है।

"जै मैय्या"

प्यार की तरंग

जग कारण साईं आप हैं दूजा अवर न कोय। जग में जो कुछ हो रहा जो वो चाहें होये।। तेरी करनी की जय तेरी करुणा की जय तेरी दया की जय।।

★ ★ ★

प्यारा लागे हे साईं तेरा दिया दुःख। तेरी हर इक देन है अमृत समान सुख।।

★ ★ ★

दाताओं के भी दाता शहँशाह जहाँ का। मंगल जो चाहे जग में बन जाए साईं माँ का।।

★ ★ ★

मेरे जनम् मरण के साथी दीजो चरणन् धूल। तेरी दया से साईं मैय्या काँटे भी बन जाएँ फूल।।

★ ★ ★

जय बक्षनहारे साईं। प्राणों से प्यारे साईं।।

★ ★ ★

साईं रूप सब प्राणियों बक्षो अवगुण मोर। गुण तो मुझ में कुछ नहीं अवगुण भरे बहुर।।

★ ★ ★

हे मेरे प्यारे प्यार। तू मोहे राखनहार।।

★ ★ ★

भज ले साईं नाम अपार। कट जाएँ उलट संस्कार।। साईं नाम में सुख का बीज। नाम लेत माँ जाएँ रीझ।।

★ ★ ★

नमस्कार से कटते पाप। सीस निवा होये निष्पाप।। माथा झुकते देखकर साईं होएँ दयाल। सदा सदा ही दीन पर कृपा करें कृपाल।।

★ ★ ★

बालक हूँ मैं साईं का बड़ा न जानो मोहे । जो कुछ है सो साईं हैं करन करावन सोए ।।

★ ★ ★

बच्चों पर तू सदा दयाला। कृपा कीजो हे प्रतिपाला।। शुकर शुकर है लाख शुकर हे मेरी सच्ची माए। किती भारी विपदा से मो को लियो बचाए।।

" ॐ श्री साईं "

श्री राम जी की स्तुति

मेरे मन में बसो निरन्तर मेरे राम हज़ूर ।
मैं हूँ चरण कमल का भँवरा कीजो शरधा पूर ।।
आओ मेरे प्राण प्यारे रघुवर कौशल राज ।
घट घट तुमरे दरस निहारूँ राम गरीब निवाज़ ।।
तुमरे बिरह में सुध बुध भूली तड़प रहे हैं नैन ।
भीतर बाहर नीर बहावें कबहुँ न आवत चैन ।।
किरपा सागर करुणासिन्धु मोहे क्यों बिसराया ।
बाल तुम्हारा भया बाँवरा सुध लीजो रघुराया ।।

" ॐ श्री साईं "

DIVINE PATH

(From the speeches of 'PAPA' Sri Anand Sai)

Merge your ego in Me

All Saints are Sri Maharaj, Baba Sainath.

Who am I? Where do I come from? Take this string and go down. Reach the source. Who am I? Reach the source. The immortal source. The origin of all creation. We have originated from that source. Let us dwell in that source. Live in that source. Do not live in the false source. Merge your false individuality into the Cosmic Divine Personality. Merge your false ego into the Divine Self. Try to realize The Self before the death claims thee. The Self is Self of all. One Self permeates all beings. Merge your little Self into The Supreme Self. The little 'i' into the Supreme I. The false foul I into the real I. The scoundrel I into the Divine I.

The whole Universe is working through One Soul, One Ego. The ego of the Holy Divine Mother. If we merge our little ego into the Divine ego, we move ahead on the Divine Path. When we come into any worldly trouble what do we do? We try to solve our problems through our own efforts, our mind works and works, goes round and round to find a solution. By this we create more complications, we create more problems. In reality those problems have come by The Will and Power, of The Universal Divine Power. How can a tiny mind of yours can solve these problems? It is as if we are trying to move The

Himalaya by dashing our head on it. The best way to solve our worldly problems or spiritual problems is to surrender to The Divine working.

Prarabadh is nothing but Divine Will; by whose Power, by whose Will *prarabadh* of a being comes. If we surrender to The Divine Power to solve our problems, that is the real way to get rid of our worldly problems. That is the way to solve our problems. We approach worldly difficulties by the wrong way. We try to solve problems given by *prarabadh*. We try to solve our difficulties, our problems that have come by the Will of God. *Prarabadh* is nothing but the Will of God. We are trying to solve the Will of God through our egoistic efforts. We are trying to stand before a steam roller. We will be crushed by the steam roller. We have no power to stand against the working of the Divine Will. Our problems, our difficulties have come by the Will of God. These can be solved only and only through Self Surrender to God.

Lord Sri Sai Baba says :–

Life is a series of problems. Do not try to solve problems by your ego. Repeat My Name, meditate on Me, all problems get solved by themselves.

This is the way to get rid of all difficulties, of all problems. We approach it in the wrong way and therefore we face untold sufferings. Why not surrender to One who can solve our problems, who is the Creator.

"Om Sri Sai."

When the very name of Sai brings tears in your eyes, know Sai is not very far.

"Om Sri Sai"

SRI ANAND SAI

OUR HEART - OUR SOUL

O Beloved Papa we your children very humbly bow at your Lotus Feet and seek Thy Blessings. Papa we pray to Thee to guide us further so that we are able to serve the ailing souls on earth. May Your message of Love reaches every corner of earth and may every being on earth live in peace. O Beloved *Satgurudev*, **"Sri Sai Geeta"** penned through You by Baba Sainath is guiding lakhs of people to lead a simple and honest life. Many souls are being benifited by the teachings of Baba going to them through the publications of Sai Publications of which You are the Founder. Papa give us the courage, motivation and strength to serve mankind as per Your wish.

Beloved *Satguru* Sri Anand Saiji insisted on *Naam Japa* and *Naam Sankirtan* that is recitation of The Divine Name or *mantra* either individually or collectively. He said that recitation of The Divine Name should not be done for ones own benefit or upliftment. It should be done for the benefit of The Universe. While chanting The Divine Name He used to ask us to make small balls of dough or mix sugar in udi. Pick one grain of wheat, rice or pulses while the mantra is recited and collect it in a plate after every recitation of Divine Name. By doing this the power of mantra is transfered to the grain. When these grains or small balls of dough are fed to animals or birds then the mantra is also fed to them which in due course of time uplifts them. It also helps one to focus or concentrate on that mantra else the mind keeps wandering here and there. We did this many times in His

presence. After collecting such mantra fed items we used to go to feed fishes in a nearby tank or feed it to animals or birds as per His instructions. Udi coated sugar was placed near the antholes. We really saw for ourselves how this worked. An incident I personally witnessed is narrated here.

Once while chanting Divine Name in Darbar small balls from dough were made. These tiny balls were collected in a tray. Beloved Papa told us to feed these to the animals we find. Some of these were fed to a goat near our residence. The goat slowly consumed them and stood there silently. As the feeding was over we tried to move her from our area but the animal was reluctant to move. This particular goat was fed by us two to three times with the dough balls empowered with mantras in a span of 30-40 days. After third feeding this animal died within few days. The owner of this goat was annoyed. He himself said he noticed a drastic change in the goat in last few days. This incident was reported to Beloved Gurudev. He said the dough balls had riden the animal from *karmas* for this birth. Now the same soul will come back to the same family as their daughter. As the owner of that goat lived near our residence we were able to follow up on the happenings in that family. After a few months a baby girl took birth in their family. The prediction of Beloved Satguru Sri Anand Saiji came true. The power of mantra is so imense that it can work wonders. The incident narrated above proves that Beloved Gurudev is *trikaldarshi*. He knows the past, present and future of every being.

The Satguru never thinks of His own well being. He is never bothered about His own comforts. He never works for Himself. He is always immersed in finding ways to relieve the sufferings of all the

beings on earth. His Love is for everyone. Caste, religion, creed never bound Him. He is beyond these barriers. Luxuries are not to His liking. Rich or poor, Hindu or Muslim, black or white all are alike to Him. Beloved Papa once told us a story which we narrate here.

A saint was to travel by a train. His disciple came to the railway station and accomodated Him in a bogie. After seating him near a window, he left. When the train started a child wanted to sit near the window. Parents of the child requested the saint and he moved to accommodate the child near the window. At the next stop some passengers boarded the train. They asked the saint to move further and he obliged. Now the saint was just barely able to sit at the edge of the seat. As the train moved to the next station a suited man boarded the train. Finding no place to sit he went to the saint and started scolding him. "You so called saints do not ever bother to purchase a ticket but you want a seat. Come on get down and let me sit there on the seat", he said to the saint. The saint sat on the floor of the bogie giving his seat to the gentleman. One of his followers came to provide food to the saint on one of the railway stations. He saw the saint was siting on the floor. He was pained. He asked the saint to move to the first class bogie. The saint agreed. After providing him food and a seat in the first class the follower asked the saint as to why was he sitting on floor. The saint very politely said Rama gave me a seat near the window, then Rama wanted that a child to sit near the window, then Rama wanted a family to sit on that seat so I moved to the corner. Then again Rama desired that I should sit on floor so He sent a gentleman to occupy my seat. Now Rama desires that I should travel in first class. He sent you to give me this comfort and I am here.

Everything happens as Rama wishes, so why should I worry. Rama takes care of Me, every place is Rama's place so why should I grudge for any comfort. This is the true status of a true saint. He is comfortable everywhere. He sees Rama's wish in everything, in every incident.

Here I remember one instance from Beloved Papa's life. Once He left for Haridwar with two three *sewaks*. They boarded a train for Delhi. We all went to see Him off. Beloved Papa boarded the train and before the train reached Itarsi He called Shri Bhandariji and told him to pack all the things as they would be getting down at Itarsi and would be returning back to Nagpur by the first available train. Shri Bhandariji asked Him, "Papa we are going to Haridwar. Why are we getting down at Itarsi?" Beloved Papa said, "Baba wishes that we should not go further hence we are not going beyond Itarsi. "No if and buts, no questions can be asked. Baba wished we boarded the train. Now Baba wishes so we are not going." All of them got down at Itarsi and the next day they were back in Nagpur. All of us were surprised to see Beloved Papa back. Then we were told how this happened. See how much surrender is needed in life. A Hundred percent self surrender is a must. We can try to surrender ourselves at The Lotus Feet of *Satgurudev* but total self surrender is possible only by The Guru's Grace. Spiritual progress of any soul is possible only by The Grace of *Satguru*. Our sincere efforts are required rest all depends on His Grace alone.

O Beloved Papa we pray to Thee
We seek you, Your Blessings
We seek Your Grace
We want nothing else from Thee

Pray forgive us, our sins,
You are ours, we are Thine.

We are glad to inform our readers that Sai Publications, Nagpur has started sending a message of Baba Sai Nath on every Thursday through SMS. If you are interested in getting this message you can contact Sai Publications and give your mobile number so as to receive Baba's message every Thursday morning. Sai Publications contact details are : **Website :** www.shrianandsai.com / saigeeta.org

E-mail : anandsai13@yahoo.com
saipublications@rediff.com

Mobile No : 9823134765 / 9373125938

Phone No. : 0712-6574825

Correspondence Address : Besides Ananda Apts., Sri Anand Sai Marg, Clarke Town, Nagpur-440 004. (M.S.)

For now, we take your leave. By the Divine Grace of Beloved Satgurudev Sri Anand Saiji we will meet you again through this column on the eve of Sri Guru Pooja. Till then "Jai Sri Sai".

"Jai Jai Data Anand Sai."
"Sri Guru Charnan Samarpayami."

Repetition of the Holy Divine Name for thirty minutes every morning earns for you a rebate in the adverse Karma-phal destined for that day.

"Om Sri Sai."

"The Ever-Oblidging Lord"

The Power of Prayer

With tears, flowing down your eyes.
A heart, full of devout love.
Kneel down, and pray before Me.
In silence your prayer has been answered.

"Om Sri Sai"

तेरे चरणों में साईं ...

तेरे चरणों में साईं ये वादा रहे, मैं तेरी बन सकूँ ये इरादा रहे।
तू हमें मुश्किलों से बचाता रहे, अपने दामन में हमको छुपाता रहे।

प्रीत करती रहूँ, प्यार करती रहूँ, हर धड़कन तुम्हें याद करती रहूँ।
तू तो साईं सदा सुखदाता रहे, तेरे चरणों में .....

भक्ति पाती रहूँ, दिल लुटाती रहूँ, तेरे नज़दीक साईं आती रहूँ।
मेरा जीवन हमेशा ही सादा रहे, तेरे चरणों में .....

तेरा अरमान दिल में जगाती रहूँ, तेरा गुणगान साईं गाती रहूँ।
तू हमें साईं शिर्डी बुलाता रहे, तेरे चरणों में .....

है गुज़ारिश यही, है ख्वाहिश यही, फरमाइश यही, सत्य साईं यही।
तू मददगार बन-बन के आता रहे, तेरे चरणों में .....

भूख मिटती नहीं, प्यास बुझती नहीं, तृप्ति होती नहीं, मुक्ति होती नहीं।
तू सदा मुझको अमृत पिलाता रहे, तेरे चरणों में .....

भावनाओं में तुम, कल्पनाओं में तुम, फिज़ाओं में तुम, हवाओं में तुम।
तू सदा हम पे रहमत लुटाता रहे, तेरे चरणों में .....

तू हमें देखकर मुस्कुराता रहे, प्यार हम पर सदा ही लुटाता रहे।
'इन्दु' को साईंमय तू बनाता रहे, तेरे चरणों में .....

हमें आनंद-पथ पर तू चलाता रहे, ज्ञान का दीप जलाता रहे।
साईं सागर से मोती लुटाता रहे, तेरे चरणों में .....

– इन्दु श्रीवास्तव, लखनऊ

माँ आदि शक्ति

जय मम जननी भवानी माता, जय जय त्रिभुवन सुखदाता।
नहीं तव आदि मध्य अवसाना, वेद पुराण कोऊ नहीं जाना।
वरनत वरनत जब सब थाके, तव माँ चरण तिहारे ताके।
तव करुणा तब कुछ-कुछ जाना, महिमा तव बहु भाँति बखाना।
तुम ही आदि शक्ति परमेश्वरी, तुम ही पराशक्ति सर्वेश्वरी।
तुम ही एक सृष्टि अधारा, लीला हेतु बदन विस्तारा।
एक से नेक भई मेरी माई, भाँति-भाँति कर खेल रचाई।
पार त्रिवेदन के महातारी, करुण कर एही अधम उबारी।
माँ किरूपा जब नयन उघारूँ, दसों दिशा में ज्योति पाऊँ।
ऐसी कृपा करो मेरी माता, सब तज भजन करहुँ दिन राता।
मन वचन कर्म परम अनुरागा, आठों पहर जपऊँ तव नामा।
परम प्रीति ध्यावहु तव चरणा, सहसो मुख सो जाई नहीं वरना।
यह सब माँ तव करुणा होई, आन उपाय सहाय न होई।
दीन हीन सुत दास तिहारा, करुणा यहि पर करहुँ अपारा।
अब की बार भव पार करावहु, चरण शरण में ठाऊ दिलावहु।
तव करुणा से पार हो जाऊँ, बहुर न तव भवसागर आऊँ।
जय जय जय माँ सर्वेश्वरी।

– *दाता कृपा,* गाज़ियाबाद

श्रद्धांजली

पिछले कई वर्षों से हमारे संपर्क में रहे साईं के परम भक्त श्री गोपेश बिहारी जी इस वर्ष जनवरी माह में बाबा साईंनाथ के चरणों में सदा सदा के लिए विलीन हो गए। बाबा के श्री चरणों प्रार्थना है कि उनके परिवार पर अपनी दयादृष्टि बनाए रखें और उन्हें हिम्मत प्रदान करें। – *संपादक*

साईं का आनंद पथ

साईं बाबा चाँदू पाटिल की बारात के साथ शिर्डी आने के पूर्व भी शिर्डी आ चुके थे। नीम वृक्ष के नीचे, तकिया और उसके पश्चात एक पुरानी मस्जिद को अपना निवास स्थान बनाया। कई वर्षों तक नीम पत्तों पर जीवित रहकर कठिन तप साधना से अपने जीवन को परिष्कृत किया। मस्जिद को वे द्वारका माई, माझी मश्दि आई कहते थे। खंडोबा मंदिर के पुजारी म्हालसापति और अन्य कई भक्तों ने उन्हें अपना गुरु मानकर सन् १८७८ से पूजा आरंभ कर दी थी। भक्तों की संख्या में लगातार वृद्धि होती रही। उदी की महिमा से अधिकाधिक लोग प्रभावित हुए। लोकमान्य तिलक ने सन् १९१७ में साईं से आशिर्वाद प्राप्त किया। नरसिंह स्वामी की प्रेरणा से सन् १९४० में अखिल भारतीय साईं समाज की स्थापना हुई। सन् १९६९ में अखिल भारतीय साईं सम्मेलन आयोजित हुआ।

साईं ने यह संदेश दिया कि अपने धर्म को सुरक्षित रखकर मानव सेवा के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। जो भक्त जिस देवता को पूजते थे साईं उस भक्त की उस देवता के प्रति श्रद्धा को स्थिर करते थे। अनंत रूपों वाले, सीमा रहित, साईं दीनदयाल सुख बाँट लेने की उदारता के साथ अपना जीवन सरल, सीधा बनाने की शिक्षा देते रहे। वे मानव में ईश्वर के अंश को पुकारते थे।

आज शिर्डी पवित्र, विशाल तीर्थ के रूप में उभरा है। देश-विदेश से सभी धर्मों के लोग यहाँ पहुँचकर अपने जीवन को परिष्कृत कर रहे हैं। कोई संतान प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, कोई समस्याओं के निदान हेतु प्रार्थना करते हैं, कोई परिवार में कष्टों से छुटकारा प्राप्त करने हेतु बाबा से दुआ माँगते हैं। शिर्डी साईं संस्था द्वारा अनेक प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। साईं प्रसाद केन्द्र का विस्तार एक अभूतपूर्व उपलब्धि है। संस्था द्वारा चिकित्सा, शिक्षा सम्बन्धी किए जा रहे कार्य सही दिशा में सही कदम है। साईं के आशिर्वाद से साईं को प्रिय सेवा कार्यों का विस्तार होता रहे बस यही कामना है।

– डॉ. वी. एस. राव, जबलपुर केन्द्र

श्री साईं गीता

निराश जगत को आस मिली है साईं गीता से।
गुण गा रहा है हर इक जन साईं गीता के।।
कोई कहे साईं गीता ने सच्ची राह दिखाई।
कोई कहे साईं गीता ने बिगड़ी मेरी बनाई।।

कोई कहे साईं गीता देवे निर्मल ज्ञान।
कोई कहे साईं गीता है साईं का गुणगान।।
कोई कहे जात पात के भेद ये मिटाए।
कोई कहे सब धर्मों में एक साईं दिखलाए।।
कोई कहे साची भक्ति साईं गीता सिखाती।
कोई कहे निर्वाण पद साईं गीता है दिखाती।।
कोई कहे श्री साईं गीता में खूब कलाम हैं।
कोई कहे सब रूपों में बसते साईं आप हैं।।
कोई कहे साईं गीता शब्द ब्रह्म का रूप है।
कोई कहे साईं गीता निर्मल परम अनूप है।।
इक इक जिव्हा पर साईं गीता गुणगान है।
साईं गीता का प्रकाश कोटि सूर्यों समान है।।
साईं गीता गाओ भाई साईं गीता अपनाओ।
रहो साईं गीता में साईं परम् दया को पाओ।।
भूलो नाहीं भूलो नाहीं साईं गीता कहाँ से आई।
आनंद साईं आनंद साईं आनंद साईं आनंद साईं।।

★

खुशनसीब हैं हम जो तेरी रहमत हमने पाई।
प्यार अनुराग तुम्हारा हमरी दौलत आनंद साईं।।

★

तेरा दिल हम पर आया, ना जाने क्या दिखा तुमको।
हम तेरे लायक तो नहीं, फिर भी अपना लिया हमको।।

– अन्जान

महत्त्वपूर्ण सूचना

हम हमारे पाठकों व सभी साईं भक्तों को सूचित करना चाहते हैं कि बाबा साईंनाथ की दया से सत्गुरु श्री आनंद साईं जी के आशिर्वाद से साईं पब्लिकेशन्स, नागपुर हर गुरुवार को सुबह बाबा का अमृत संदेश आपके मोबाईल पर SMS द्वारा भेजता है। यदि आप भी हर गुरुवार सुबह बाबा का अमृत संदेश प्राप्त करना चाहते हैं तो आप साईं पब्लिकेशन्स से संपर्क कर अपना मोबाईल नम्बर (भ्रमण ध्वनि क्रमांक) लिखवा दें। साईं पब्लिकेशन्स से संपर्क निम्न प्रकार किया जा सकता है :–

ई-मेल : anandsai13@yahoo.com
saipublications@rediff.com
मोबाईल : 9823134765 / 9373125938
फोन : 0712-6574825

पत्रव्यवहार के लिए पता –
आनंदा अपार्टमेंट के पास, श्री आनंद साईं मार्ग,
क्लार्क टाऊन, नागपुर-440 004. (महाराष्ट्र)

Reg. No. 30/09 dt. 20/04/2009

हमारा पता : साईं पब्लिकेशन्स
श्री आनंद साईं मार्ग, आनंदा अपार्टमेन्टस, क्लार्क टाउन, नागपुर-440004.
फोन : 0712 -6574825, भ्रमण ध्वनि: 9823134765